ISSN No. 2349-4654
नाद - नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 1, अंक : 2, दिसम्बर 2014

सितार वाद्य में परिसंस्कार की आवश्यकता

डॉ. पुरुषोत्तम कुमार
सहायक प्रवक्ता, संगीत एवं नृत्य विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

सार-संक्षेप

प्रस्तुत शोध पत्र में सितार वाद्य से सम्बन्धित समय-समय पर आने वाली समस्याओं से सम्बन्धित है। विशेषकर इसके मरम्मत को ध्यान में रखकर लिखा गया है। एक समय था जब सितार के कारीगर आसानी से उपलब्ध हो जाते थे, लेकिन वे भी बड़े-बड़े शहरों में तो आसानी से मिल जाते थे, लेकिन छोटे शहरों में तो तब भी उपलब्ध न थे और आज भी उपलब्ध नहीं हैं। स्थिति जस की तस बरकरार है। बड़े शहरों में भी यह स्थिति देखने को मिल रही है जहाँ कारीगर ना के बराबर हैं। जो भी हैं वे इतने महँगे हैं कि विद्यार्थी वर्ग आर्थिक तंगी के कारण उनसे सितार की मरम्मत नहीं करवा पाता। ऐसी स्थिति में यदि विद्यार्थी स्वयं इसकी मरम्त करना सीख ले तो सितार की मरम्मत करने के लिए कहीं दूर नहीं जाना पड़ेगा और स्वयं इसकी मरम्मत करने में दक्ष बनेगा। इस पत्र में विद्यार्थी को सितार की मरम्मत करने की विधि बतलाई गई है।

शोध-पत्र

सितार जैसे वाद्य में परिसंस्कार (मरम्मत) की आवश्यकता इसलिए पड़ती है, क्योंकि यह वाद्य बेहद नाज़ुक होता है। इसमें बहुत-सी चीज़ें समय-समय पर मरम्मत माँगती हैं। सितार का तुम्बा बेहद नाजुक होता है। हल्की-सी ठेस से ही यह टूट सकता है। सितार वादन के समय, इधर- उधर रखते समय या सफर के दौरान सितार जैसे वाद्य में सबसे अधिक तुम्बे के ही टूटने का भय रहता है।[1]

कई बार तो स्थिति इतनी विकट भी हो जाती है कि तुम्बे के कई टुकड़े हो जाते हैं, जिससे इसका जुड़ पाना बहुत ही कठिन हो जात है। पर कहा जाता है कि तुम्बे के टुकड़े भले ही कितने भी हो जाएँ, लेकिन यदि सभी छोटे-बड़े टुकड़े उपलब्ध हैं तो इसे जोड़ा जा सकता है। काम मुश्किल है, पर असम्भव नहीं है। परन्तु जब इसके टूटे हुए टुकड़े नहीं मिलते तो इसे जोड़ पाना कठिन हो जाता है। तुम्बे के बाद बारी आती है पर्दों की। सितार में पर्दे भी बहुत टूटते हैं। ख़ासकर उस समय जब वादक नया-नया होता है। जब राग बदलते हैं तो उनके अनुसार पर्दे भी ऊपर या नीचे करने पड़ते हैं। ऐसे में उनके बाँधने वाली डोरी टूट जाती है। सितार में तार भी अधिक टूटते हैं। तार तो सबसे ही टूट जाते है। फिर चाहे वो नया सितार वादक हो या कुशल सितार वादक।

कहा तो यह जाता है कि 90 दिन के बाद सितार के तार बदल देने चाहिएं। इसका करण यह है कि 90 दिन के बाद सितार के तार कमज़ोर पड़ने शुरू हो जाते हैं। दूसरी निशानी ये भी है कि पुरानी तार ज़ंग खाने लगती है, जिसको बजाने में वादक को कठिनाई होती है। यदि नया सितार वादक ज़ंग खायी तारों वाली सितार को बजाएगा तो उसकी उंगलियाँ कट जाएँगी। सितार वादन के समय बाज की तार और चिकारी की तार सबसे अधिक टूटती हैं। किन्तु इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि बाकी की तारें नहीं बदलनी चाहिए।[2] अब बात आती है सितार की जवारी की। जवारी का सितार में बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। जवारी जितनी अच्छी होगी, सितार की ध्वनि भी उतनी ही मधुर होगी। लम्बे समय तक सितार का वादन करने से जवारी में तारों के खिंचवा के कारण गड्ढे पड़ जाते हैं। जिनसे ध्वनि की गुणवत्ता में धीरे-धीरे करके कमी आने लगती है। अत: जवारी को सही रख-रखाव की आवश्यकता रहती है।[3] अब हम बात करेंगे सितार के परिसंस्कार (मरम्मत) के बारे में। सितार के परिसंस्कार को विभिन्न चरणों में पूरा किया जाता है। यह भी हो सकता है कि जिस अंग में विकार हो, बस उसी का परिसंस्कार किया जाए। बहुत से नामी सितार वादक समय-समय पर अपने सितार का परिसंस्कार करवाते रहते हैं। ताकि यदि अचानक किसी कार्यक्रम में सितार वादन करना पड़ जाए तो उनका सितार सदैव तैयार रहे।

तुम्बा जोड़ना

तुम्बा लौकी के बड़े आकार को सुखा कर प्राप्त किया जाता है। तत्पश्चात् उसका स्वरूप परिवर्तन कर इच्छित आकार प्राप्त किया जाता है। इसकी प्रकृति बहुत ही नाजुक होती है। यह किसी भी ठोस वस्तु का आघात सहन नहीं कर पाता। महाराष्ट्र के मिरज से दक्षिण भारत के राज्य अधिक दूरी पर नहीं है, परन्तु वहाँ के वीणा निर्माताओं ने प्रकृति प्रदत्त तुम्बे को स्वीकार न कर लकड़ी के तुम्बे को स्वीकार किया। शायद इसलिए कि तुम्बा अपनी प्रकृति से अत्यंत नाजुक होता है और लकड़ी अत्यंत ठोस होती है। लकड़ी का तुम्बा लगाने से उसके टूटने की सम्भावनाएँ लगभग क्षीण हो जाती है।

तुम्बे पर किसी ठोस वस्तु के टकराने से तुम्बे के टूटने पर कई हिस्से हो जाने से उसे जोड़ना बहुत मुश्किल काम होता है। तुम्बे के टूटने पर उसकी मरम्मत के लिए कारीगर के पास भेजा जाता है। वह तभी सुधारने-लायक होता है, जब उसके टूटे हिस्से भी उपलब्ध हों। ऐसा न होने की स्थिति में यह कार्य अत्यंत कठिन हो जाता है तथा इस स्थिति में सम्पूर्ण तुम्बे को बदलना ही ठीक होता है। यह कारीगर के लिए एक और असम्भव कार्य होता है कि तबली के आधार पर तुम्बे का निर्माण किया जाए। जबकि आरम्भिक स्थिति में तुम्बे के आधार पर तबली का निर्माण किया जाता है।[4]

आज के तकनीकि युग में कई प्रकार के मानव निर्मित पदार्थों का विकास हुआ है। जिनसे विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाई जा रही हैं और वे अत्यंत ठोस होती हैं। उनसे बनी वस्तुएँ टूटती भी नहीं। रोज़मर्रा की चीजों के अतिरिक्त इन पदार्थों से सांगीतिक वाद्यों में भी प्रयोग आने वाले हिस्सों का निर्माण होने लगा है। इनसे तुम्बे का निर्माण भी होने लगा है। जो कि फाइबर ग्लास से बनाया जाता है। यह एक अत्यंत सराहनीय प्रयास है। सितार, सरोद, सारंगी, तबला, संतूर, रूद्र वीणा, विचित्र वीणा आदि को रखने के लिए फाइबर ग्लास के बक्से भी बनने लगे हैं, जिससे अब वाद्यों में तुम्बे के अतिरिक्त उनके किन्हीं अन्य भागों को भी किसी प्रकार के नुकसान की सम्भावना बिल्कुल भी नहीं रहीं है। एक प्रयोग के रूप में फाइबर ग्लास से बना तुम्बा तानपूरे में लगाया गया है, जिसके परिणाम अत्यंत सुखद हैं। इसका नाद भी बिल्कुल वैसा ही है, जैसा कि प्रकृति प्रदत्त तुम्बे में होता है। मानव निर्मित इस तुम्बे में टूटने की सम्भावनाएँ लगभग न के बराबर हैं। परन्तु प्राकृतिक तुम्बा ही भारत में सितार के लिए सर्वाधिक उपयोग किया जाता है।[5] तुम्बे को जोड़ने के लिए हमें सबसे पहले इस बात पर ध्यान देना होगा कि तुम्बा टूटने की दशा क्या है। उसके सभी टुकड़े उपलब्ध हैं या नहीं।

इसका कारण यह है कि कई बार तुम्बा अधिक आघात लगने से इस प्रकार टूट जाता है कि उसे जोड़ पाना कठिन होता है। ऊपर दिये गये चित्र में देखें तो यह लगता ही नहीं कि इस प्रकार टूटे हुए तुम्बे को जोड़ा भी जा सकता है। इस तुम्बे के इतने टुकड़े हो चुके हैं कि इन्हें गिन पाना

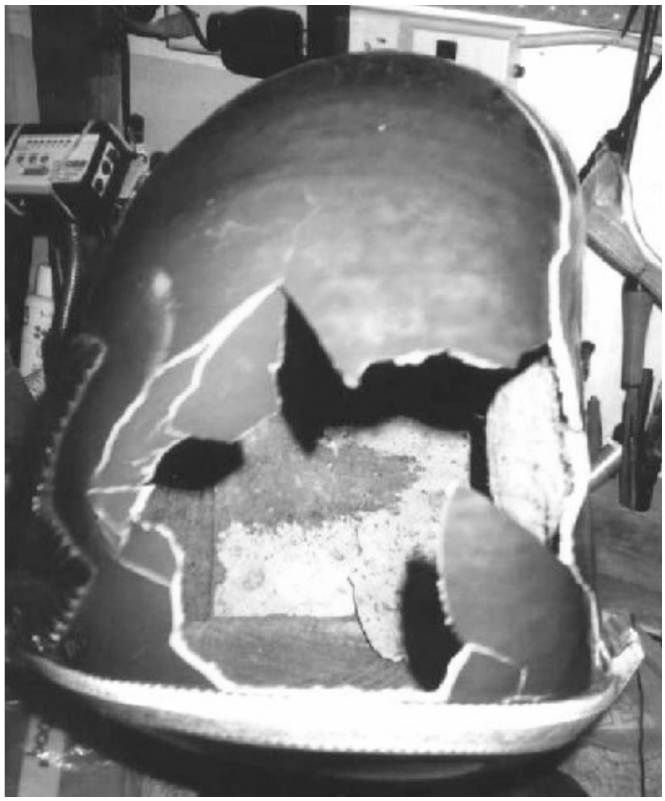

भी सम्भव नहीं हो पा रहा और न ही सारे टुकड़े उपलब्ध हैं। जहाँ से तुम्बा टूटा है उस जोड़ को सबसे पहले एक या दो तीलियों की मदद से इस तरह से खोलिए कि इसकी दरार साफ-साफ दिखाई देने लगे।

नीचे दिये गये चित्र को देखिये—

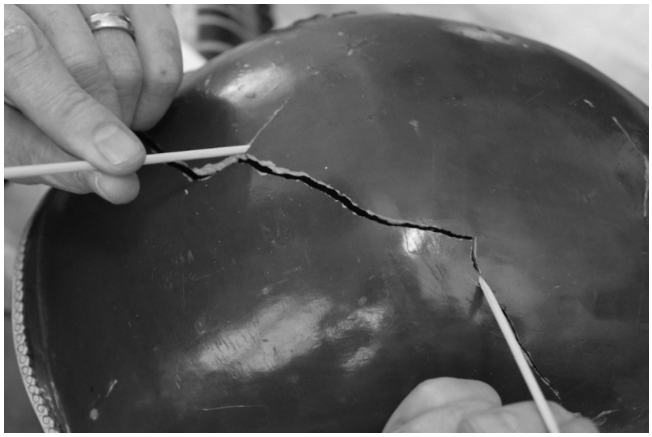

फिर टूटे हुए तुम्बे की दरार में अच्छी तरह से चिपकाने वाला पदार्थ, फेविकोल (ग्लू), टाइटबॉण्ड ग्लू आदि लगा दें। फेविकोल लगाते हुए इस बात का द्यान रखना आवश्यक है कि टूटे हुए तुम्बे का कोई भी ऐसा कौना न बचे जिस पर फेविकोल न लगा हो। ऐसा करना इसलिए आवश्यक है ताकि टूटे तुम्बे का हर हिस्सा सही तरीके से आपस में चिपक जाए और टूटा हुआ तुम्बा फिर से जुड़ जाए।[6] ध्यान रहे कि यदि तुम्बे का कोई कोना बिना फेविकोल या ग्लू के रह गया तो इसे

दोबारा चिपकाने में बहुत कठिनाई आएगी और यदि ऐसा करना पड़ गया तो तुम्बे की अपनी आकृति को नुकसान हो सकता है।

यह सुनिश्चित करने के बाद कि ग्लू सब जगह लग गया है, तुम्बे को दानों हाथों के दबाव से अच्छी तरह से चिपका दें और सावधानीपूर्वक इसे किसी नरम और मज़बूत रस्सी से बाँध दीजिए। यदि मूँज जैसी कठोर रस्सी से इसे बाँधा गया तो तुम्बे पर बड़े-बड़े निशान पड़ जाएँगे।

नीचे दिये गये चित्र के अनुसार—

रस्सी के साथ बाँधना इसलिए आवश्यक है ताकि टूटा हुआ तुम्बा अच्छी तरह से चिपक जाए। रस्सी से बाँधने के बाद इसे कुछ दिनों के लिए किसी सुरक्षित स्थान पर रख देना चाहिए। ताकि कोई इसे न छेड़े। कई बार तो नमी वाले मौसम में यह अवधि बहुत लम्बी भी हो जाती है, जबकि शुष्क मौसम में कुछ ही दिनों में सितार का यह टूटा हुआ तुम्बा अच्छी तरह से चिपक जाता है और सितार फिर से बजने के लिए तैयार हो जाती है।[7]

इस प्रकार से जुड़े हुए तुम्बे किसी प्रकार की कोई कमज़ोरी नहीं आती। यह तुम्बा पहले की ही भान्ति सुदृढ़ होता है और ध्वनि भी पहले जैसी ही होती है। किन्तु इससे पहले सितार के इस तुम्बे वाले हिस्से को छोड़कर बाकी हिस्से को अखबार से अच्छी तरह से ढक दें। नीचे दिये गये चित्र के अनुसार—

अखबार से ढकना इसलिए आवश्यक है कि तुम्बे को छोड़कर बाकी हिस्से पर स्प्रे (रंग) न हो और तुम्बे पर बड़ी खूबसूरती के साथ रंग हो सके। आपका सितार फिर से चमचमाता हुआ तैयार हो जाएगा। इस प्रकार टूटे हुए तुम्बे को जोड़ने की प्रक्रिया पूर्ण होती है।

जवारी खोलना

जवारी का अर्थ है टिकाव, अर्थात् घोड़ी (Bridge) पर तार को किस प्रकार टिकाएँ कि वह साफ और लम्बे साँस की आवाज दे। देखिए वायलिन, इसराज व सरोद आदि वाद्यों में तार केवल घोड़ी के नुकीले किनारे पर रखा रहता है। इन वाद्यों में घोड़ी का आकार सादा गोलाई लिये हुए होता है। इन वाद्यों में तार घोड़ी पर केवल रखा ही रहता है, परन्तु इसके विपरीत वीणा अथवा सितार में तार को एक चौड़ी और चपटी सतह पर रखा जाता है। यह वस्तु घोड़ी कहलाती है। इसी को ब्रिज, जवारी और घुड़च आदि नामों से जाना जाता है।[8]

जवारी के संबंध में स्टीफन स्लावेक ने अपनी पुस्तक में लिखा है—

"In order to produce an even, rich sound, the *Javari* must be filled to a precise curvature. The filling technique is highly specialized craft, and there are only a few Sitar makers in India who can produce a good *Javari*. It is not uncommon for a *Sitar*ist to travel great distances to have his *Sitar*'s *Javari* filled."[9]

यदि हम इस घोड़ी के उस स्थान को जो इकसार चपटा-सा दिखायी दे रहा है, इसी प्रकार बेमालूम-सा गोल कर दें तो हमारा तार भी इतनी बड़ी घोड़ी पर अथवा यूँ कहो कि इतनी बड़ी सतह पर केवल एक स्थान पर ही रखा रहेगा।[10]

अत: जवारी खोलने के लिए यह आवश्यक है कि रेगमार अथवा नये रेजर ब्लेड से जवारी को (घोड़ी को) इस प्रकार रगड़ें कि उसकी सतह का आकार बेमालूम सा बन जाए। बेमालूम-सा से मेरा मतलब यही है कि घोड़ी इस आकार की दिखाई न देने लगे। बल्कि जब ब्लेड को घोड़ी की चैड़ाई पर रगड़ा जाए तो किनारों पर हाथ को तनिक-सा दबाकर रगड़ें और जब ब्लेड जवारी को घिसते-घिसते, बीच में आये तो हाथ का दबाव कम कर देना चाहिए। इस प्रकार घोड़ी में एक ऐसी गोलाई-सी आ जाएगी कि तार यद्यपि सम्पूर्ण घोड़ी पर ही रखा हुआ दिखाई देगा, पर वह घोड़ी को केवल एक ही स्थान पर छुएगा। भिन्न प्रकार की मोटाई के तारों को रखने के स्थानों को भिन्न प्रकार से ही घिसा जाएगा।[11]

जब जवारी अच्छी तरह से खुल जाए तो बाज के तार को घोड़ी पर चढ़ा कर देखिये। अगर हर परदे पर साफ, दमदार और लम्बी साँस वाली आवाज निकले तो यह समझ लीजिए कि जवारी खुल गई है। यदि सारे परदों पर ध्वनि एक जैसी ही सुनाई दे तो मान लीजिए कि जवारी पूरी तरह से ठीक हो गयी है।[12] यदि यह किसी भी परदे पर अलग ढंग की आवाज देती है तो धीरे-धीरे पुन: तार हटाकर घोड़ी को इसी प्रकार से फिर रगड़िए। रगड़ने के बाद फिर से तार चढ़ाकर बजाइए। जब तक हर परदे पर ध्वनि एक जैसी ही न हो जाए, इसी प्रकार करते रहिए।[13]

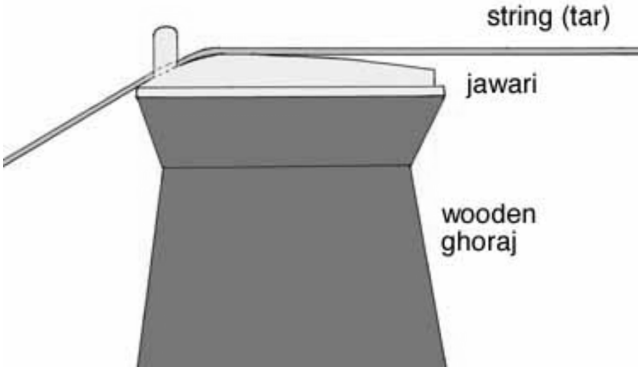

एक बात का ख़ास ध्यान अवश्य रखिए कि कहीं आप घोड़ी को इतनी जोर से न रगड़ दें कि वह सारी ही घिसकर बराबर न हो जाए। एक बार की जवारी खोलने के लिए लगभग एक कागज की माटाई जितनी मोटाई घिसना ही काफी होगा। तरब वाले सितारों में कई बार ऐसा भी होता है कि जिस परदे पर तरब स्वर में मिली हो, वह स्वर बड़ा उत्तम बोलता है, बाकी परदों पर जब बजाया जाता है तो आवाज एकदम ठस हो जाती है। इसलिए जवारी ठीक ठाक खुलने पर भी कई बार यह भ्रम हो जाता है कि शायद अभी ठीक से नहीं खुली है। [14]

इसीलिए जवारी खोलते समय या तो किसी कपड़े से तरब के तारों को बाँध दिया जाए कि तरब की आवाज ही न हो सके या फिर केवल इसी बात का ध्यान रखा जाए कि तार सब परदों पर ठीक एक ही प्रकार की ध्वनि दे रही है या नहीं। जब थोड़ा अभ्यास हो जाएगा तो ये सब बातें समझ में आने लगेंगी कि कैसे क्या करना है और कितना करना है। [15] यदि आप ये क्रिया सीख जाएँगे तो आपको सितार की जवारी खुलवाने के लिए किसी और पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। इतनी बात जरूर है कि जवारी खोलने का अभ्यास एकदम नहीं होता, बल्कि कई बार करते-करते ही उसका अभ्यास पड़ेगा। कभी-कभी अचानक थोड़ी-सी देर में ही थोड़ी अनुकूल घिस जाने पर जवारी खुल जाती है और कभी-कभी घण्टों लग जाते हैं, अत: इसका अभ्यास प्रारम्भ में काफी करना चाहिए, तब हाथ स्वत: ही सध जाता है।

तार बदलना

सितार बजाते समय सामान्यत: तार टूट जाते हैं। बाज की तार और चिकारी की तार ही सितार में सबसे अधिक टूटती हैं। कई बार तो ऐसा देखा गया है कि सितारवादन के समय अचानक तारें टूट जातीं हैं और सीधी उंगली में या मुँह पर लगती हैं और गम्भीर चोटें भी आ जाती हैं। इसका कारण यह है कि ये तारें पूरी तरह से कसी हुई होती हैं। कसी हुई

तार जब एक स्थान से टूटती है तो उसकी गति विपरीत दिशा में होती है, वह भी अति तीव्र। तार बदलने में सबसे पहले तार की गुच्छी को इस ढंग से पकड़ कर तार को खोलें कि तार आपस में उलझे नहीं। फिर जितनी तार आपको चाहिए, उतनी तार काट लीजिए। तार के माप के लिए आवश्यक है कि जिस भी तार की लम्बाई जाननी हो, उसकी खूँटी से लंगोट का लम्बाई को माप लीजिए, इस लम्बाई से लगभग दस या बारह इंच लम्बी तार काट लीजिए ताकि तार का लूप भी बन जाए और खूँटी पर भी सही ढंग से लिपट जाए।[16] फिर इस तार के एक छोर पर लूप बना लीजिए, जिसे हमने लंगोट में अटकाना है। लूप बनाने के लिए तार के एक छोर को घुमाइए और उसे चार-पाँच बार तार पर लपेट दीजिए। यह कार्य इस प्रकार से करना चाहिए कि तार का लूप कसाव के बाद खुल न जाए। जब चार-पाँच बार लपेटे आ जाएँ, फिर तार के इस छोर को अन्दर की तरफ सीधा (Flat) कर दीजिए। ऐसा इसलिए करना चाहिए कि तार हाथों में न चुभे।

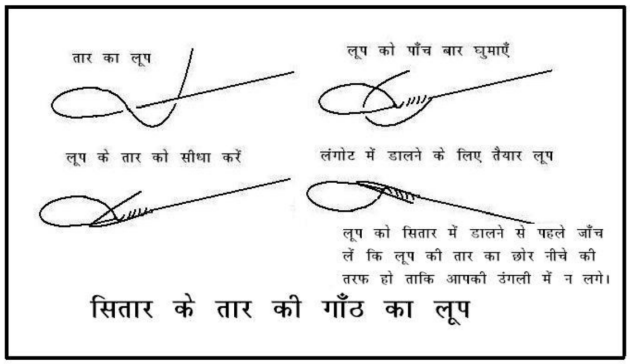

सितार के तार की गाँठ का लूप

तार के एक छोर पर लूप तैयार होने के पश्चात् इसके दूसरे छोर को खूँटी के छेद में पिरो दें और एक घुमाव दें। फिर घुमाव वाले तार को खूँटी के छेद में एक बार फिर से डाल दें ताकि खूँटी को कसते समय तार उंगली में न लगे। इसके पश्चात् लूप वाले छोर को लंगोट में अटका दें और तार को ब्रिज पर इसके लिए निश्चित स्थान पर रख दें। फिर खूँटी को इसके इसके लिए किये गये छेद में डालकर कस दीजिए।[17] एक और बात ध्यान रखने योग्य है कि यदि इस तार में मनका डलता है तो लूप बनाते समय पहले ही डाल दें और यदि यह तार तारगहन में से होकर गुज़रने वाली हो, तो भी इसे पहले ही तारगहन में इस तार के लिए किये गये छेद में डाल लें ताकि बाद में परेशानी न हो।

खूँटी के छेद में तार लपेटना

खूँटी पर तार लपेटना

अब बारी आती है तरब के तार डालने की। तरब की तार डालने के लिए थोड़ी अलग प्रक्रिया है। तरब की तारें डालने के लिए डाँड की पटरी पर तरब के लिए किये गये छेद में तार डालिए और तरब की खूँटी के लिए किये गये छेद में से तार को एक निश्चित माप के हुक की सहायता से बाहर खींचिए। इसके पश्चात् इस तार को तरब की खूँटी के छेद में उसी प्रकार डालिए, जिस प्रकार से बाकी की खूँटियों में तारों को डाला जाता है। तरब की खूँटी अपेक्षाकृत पतली होती है। तो ज़ाहिर-सी बात है कि इसमें तार के लिए किया गया छेद और भी अधिक बारीक होगा। अत: इसमें से तार पिरोने के लिए ध्यान भी अधिक देना होगा। खूँटी के छेद में से तार को दो बार लपेटने के बाद उसे छेद में डालकर मोड़ दें ताकि वह उंगलियों में न चुभे। तरब के तार मुख्य ब्रिज से आगे रखे हुए छोटे ब्रिज पर रखे जाते हैं। अत: जो तार टूटी हो उसे उसी के लिए नियत स्थान पर रखें। तत्पश्चात् उस तार को उसके निर्धारित स्वर में मिला लें। आपकी सितार तैयार हो जाएगी। [18]

सितार के तार कुछ समय के बाद बदल देने चाहिएँ। क्योंकि कई बार ऐसा होता है कि तारें काफी समय तक भी नहीं टूटतीं। ऐसे में उन तारों पर रखे-रखे ज़ंग लग जाता है या फिर वे कमज़ोर पड़ जातीं हैं। ऐसे में यदि आपको किसी कार्यक्रम में सितार वादन करना पड़ जाए तो आपकी सितार कार्यक्रम के बीच में ही आपका साथ छोड़ सकती है। अत: समय समय पर सितार की तारों को नियमित रूप से बदलते रहना चाहिए।[19]

पॉलिश करना

पॉलिश करना सितार के वादन के लिए आवश्यक नहीं है, किन्तु सितार के सौन्दर्यशास्त्र की दृष्टि से यह कार्य अत्यन्त आवश्यक है। चीज़ कोई भी हो, चमकती हुई ही अच्छी लगती है और बात जब सितार जैसे सुन्दर व सुमधुर वाद्य की हो तो यह और भी अधिक ज़रूरी हो जाता है कि सितार चमचमाता हुआ होना चाहिए। घर पर पॉलिश बनाने के लिए सबसे पहले एक ऐसा बर्तन लीजिए, जिसमें पालिश को अच्छी तरह से घोला या मिलाया जा सके। इसके लिए किसी बड़ी बोतल का प्रयोग करना अधिक हितकर होता है क्योंकि इसे तो ऊपर से पकड़ कर बहुत अच्छे से हिलाया जा सकता है। चपड़ा और लखड़ना को अच्छी तरह से मिला लीजिए। उसके उपरान्त किसी बोतल में डाल लीजिए। इस घोल में फिर स्प्रिट डालिए और इसे कुछ दिनों तक किसी सुरक्षित स्थान पर रख दीजिए, ताकि कोई बच्चा इसके सम्पर्क में न आ सके। कुछ दिन के बाद जब आप इस स्प्रिट मिले घोल को देखेंगे तो यह एक अच्छा ख़ासा केमिकल बन चुका होगा, जिसे पॉलिश करने के लिए आप इस्तेमाल कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में डॉ. रवि शर्मा ने अपनी पुस्तक 'सितार एज़ आई नो' में लिखा है—

"As per information of the makers the polish it self is made in the home by maker. In a bottle the spirit is poured in which 'Chapra' and 'Lakhdana' are mixed and kept for seasoning the Lakhdna and the Chapra and turned to a sort of chemical, ready for polishing.[20]

यदि सारी की सारी सितार पर आप पॉलिश करना चाहते हैं तो सबसे पहले इसके सभी पर्दे और तार उतार दीजिए। सितार के सब हिस्सों को रेगमार से साफ कर लेना चाहिए। ऐसा करने से इसकी कोई भी सतह खुरदरी नहीं रहेगी। इसके पश्चात् सितार को किसी मुलायम से कपड़े से अच्छी तरह से साफ कर लीजिए ताकि धूल का कोई कण सितार पर न रहे। फिर पॉलिश के केमिकल को किसी छोटे और खुले बर्तन में लेकर एक साफ स्वच्छ ब्रश की सहायता से सितार पर लगाइए। इस सम्बन्ध में डॉ. रवि शर्मा ने लिखा है—

"prior to apply the polish on the instrument, it is rubbed with a sand paper. This functioning is very essential to remove the out cut fibres, rough good quality of polishing can be done at all. The sand paper makes the entire surface even and smooth. Now for polishing a home made chemical is applied on the structure. The chemical is taking a soft gauze and very gently applied on the body again and again unless the polish looks bright and glazed. The polishing work is very tedious and pain taking because one has to apply many layers of the liquid. Ultimately when the polishing work is finished the whole instrument shines like a diamond. [21]

पालिश से पहले सितार की स्थिति

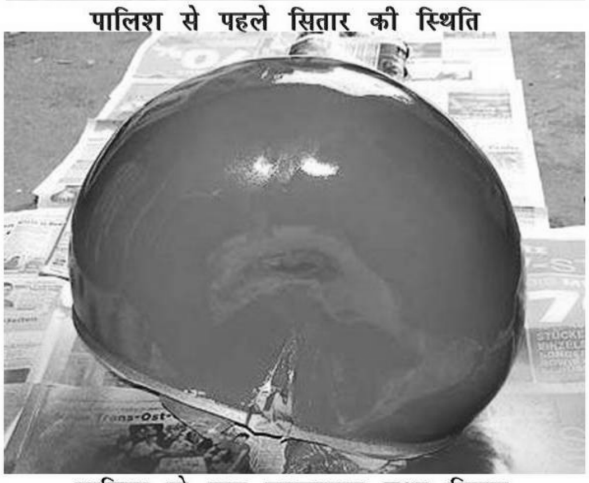

पालिश के बाद चमचमाता हुआ सितार

अर्थात् पॉलिश करने से पहले सितार को रेगमार से पॉलिश को बार बार सितार पर लगाया जाता है। यह काम थकाने वाला होता है क्योंकि बार बार एक ही काम करने से हाथों में दर्द होने लगता है। किन्तु बार बार पॉलिश लगाने और रगड़ने का परिणाम यह होता है कि सितार हीरे की तरह चमकने लगता है। बस इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि बिना थकान का अनुभव किये पॉलिश लगाले जाना पड़ता है। इसका एक तरीका यह हो सकता है कि जब भी पॉलिश का कार्य किया जाए तो उससे पहले पूरी तरह आराम करें अर्थात् कोई ऐसा काम न करें कि आप पहले ही थके हुए अनुभव करें। यदि पहले ही थके होंगे तो पॉलिश करने जैसा थकाऊ कार्य करना सम्भव नहीं है। यदि ऐसा किया तो बिल्कुल ही बुरी हालत हो जाएगी या फिर पॉलिश करने का कार्य अच्छी प्रकार से नहीं हो पाएगा। [22]

यह प्रक्रिया ठीक उसी तरह से होती है जिस तरह से जूतों को चमकाया जाता है। सितार की पूरी बॉडी पर पॉलिश अच्छी तरह से लगाइए। ध्यान रहे कि कहीं भी सितार की सतह का कोई भी कोना छूट न जाए। इसके पश्चात् इसे थोड़ी देर तक सूखने के लिए रख दीजिए। जब ये अच्छी तरह से सूख जाए तो इसे किसी मलमल के चाफ सुथरे कपड़े की सहायता से तब तक रगड़ते रहिये जब तक आपकी सितार हीरे की तरह चमकने न लग जाए।

पाद-टिप्पणियाँ

1. सितार निर्माता मंगला प्रसाद शर्मा से प्राप्त जानकारी के आधार पर (19 सितम्बर, 2014 संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली में वर्कशॉप)।
2. नईम सितार मेकर, चण्डीगढ़ से किए गए साक्षात्कार के आधार पर (20 मार्च, 2011)
3. वही
4. सितार निर्माता मंगला प्रसाद शर्मा से प्राप्त जानकारी के आधार पर (19 सितम्बर, 2014 संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली में वर्कशॉप)।
5. डॉ. रवि शर्मा (अधिष्ठाता, ललित कला संकाय, म. द. वि. रोहतक) से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
6. डॉ. रवि शर्मा (अधिष्ठाता, ललित कला संकाय, म. द. वि. रोहतक) से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
7. सितार निर्माता मंगला प्रसाद शर्मा से प्राप्त जानकारी के आधार पर (19 सितम्बर, 2014 संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली में वर्कशॉप)।
8. सितार निर्माता मंगला प्रसाद शर्मा से प्राप्त जानकारी के आधार पर (19 सितम्बर, 2014 संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली में वर्कशॉप)।
9. Slawek, Stephen, Sitar technique in Nibaddh Form, Page no. 15
10. भगवतशरण शर्मा, सितार मालिका, पृ. 19
11. भगवतशरण शर्मा, सितार मालिका, पृ. 20
12. सितार निर्माता मंगला प्रसाद शर्मा से प्राप्त जानकारी के आधार पर (19 सितम्बर, 2014 संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली में वर्कशॉप)।
13. भगवतशरण शर्मा, सितार मालिका, पृ. 20

14. सितार निर्माता मंगला प्रसाद शर्मा से प्राप्त जानकारी के आधार पर (19 सितम्बर, 2014 संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली में वर्कशॉप)।
15. भगवतशरण शर्मा, सितार मालिका, पृ. 20
16. सितार निर्माता मंगला प्रसाद शर्मा से प्राप्त जानकारी के आधार पर (19 सितम्बर, 2014 संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली में वर्कशॉप)।
17. सितार निर्माता मंगला प्रसाद शर्मा से प्राप्त जानकारी के आधार पर (19 सितम्बर, 2014 संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली में वर्कशॉप)।
18. सितार निर्माता मंगला प्रसाद शर्मा से प्राप्त जानकारी के आधार पर (19 सितम्बर, 2014 संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली में वर्कशॉप)।
19. डॉ. रवि शर्मा (अधिष्ठाता, ललित कला संकाय, म. द. वि. रोहतक) से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
20. Sharma, Ravi, Sitar As I Know, Edition first 1999, Page no.-155
21. Ibid
22. Ibid

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Slawek, Stephen M., Sitar Technique in nibadha forms, Motilal Banarasi Das, Bunglow road, Jawahar Nagar, Delhi-110007, First Edition 1987

Sharma, Ravi, Sitar as i know, Tauryatrikam Publication, 45 A, S.F.S. Flats Motiya Khan, Delhi-110055, First Edition 1999

शर्मा, भगवतशरण, सितार मल्लिका, संगीत कार्यालय, हाथरस, द्वितीय संस्करण